बीबीएयू को बायोप्लास्टिक के उत्पादन के लिए मिला पेटेंट

संवाद न्यूज एजेंसी

लखनऊ। बीबीएयू के एनवायर्नमेंटल माइक्रोबायोलॉजी विभाग के प्रोफेसर डॉ. रवि गुप्ता को गाय के गोबर और नए बैक्टीरिया का उपयोग करके कम लागत वाले बायोप्लास्टिक के उत्पादन के लिए केंद्र सरकार से पेटेंट मिला है। ये पेटेंट 20 साल के लिए है।

डॉ. गुप्ता ने बताया कि पेट्रोलियम आधारित सिंथेटिक प्लास्टिक दैनिक जीवन में सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली सामग्री में से एक है। इसके परिणामस्वरूप गैर-अपघटनीय अपशिष्ट पदार्थ जमा हो जाते हैं जो हजारों वर्षों तक पर्यावरण में रहते हैं और प्लास्टिक प्रदूषण पैदा करते हैं।

पृथ्वी पर कई प्रजातियां प्लास्टिक के कारण होने वाले प्रदूषण से पीड़ित हैं। यह प्रदूषण ग्लोबल वार्मिंग के प्रमुख कारणों में से एक है। इस पेटेंट को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरके मित्तल ने बड़ी उपलब्धि बताया है।

गाय के गोबर व नए बैक्टीरिया से किया जाएगा उत्पादन

डॉ. रवि को बायोप्लास्टिक बनाने के लिए मिला 20 वर्षों का पेटेंट। -संवाद

- **आसपास फैले प्लास्टिक प्रदूषण से बचने की जरूरत :** निरतंर विकास के लिए हमें बायोडिग्रेडेबल सामग्रियों का उपयोग करके अपने पर्यावरण को प्लास्टिक प्रदूषण से बचाने की आवश्यकता है। प्लास्टिक जैसे गुणों वाले बायोडिग्रेडेबल पदार्थ गन्ना, मक्का, गेहूं, चावल, केले के छिलके जैसे बायोमास से बनाए गए हैं। ऐसे आवश्यक गुण सूक्ष्मजीवों की ओर से संश्लेषित पॉलीहाइड्रॉक्सी ब्यूटिरेट (पीएचबी) में भी मौजूद हैं। बैक्टीरिया से कई प्रकार के पीएचबी की खोज की गई है और इनका बायोप्लास्टिक के रूप में इस्तेमाल किया गया है।